पाल काल का बिहार

प्रमुख शासक :-

1. गोपाल (750 ई. से 770 ई. तक)

- पाल वंश का संस्थापक गोपाल को माना जाता है। इसे जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से चुनकर शासक बनाया गया। उसने पालवंश की सत्ता को बिहार में फैलाया तथा मुंगेर को अपनी राजधानी बनाया।
- उसने ओदंतपुरी महाविहार (बिहार शरीफ) का निर्माण करवाया था।

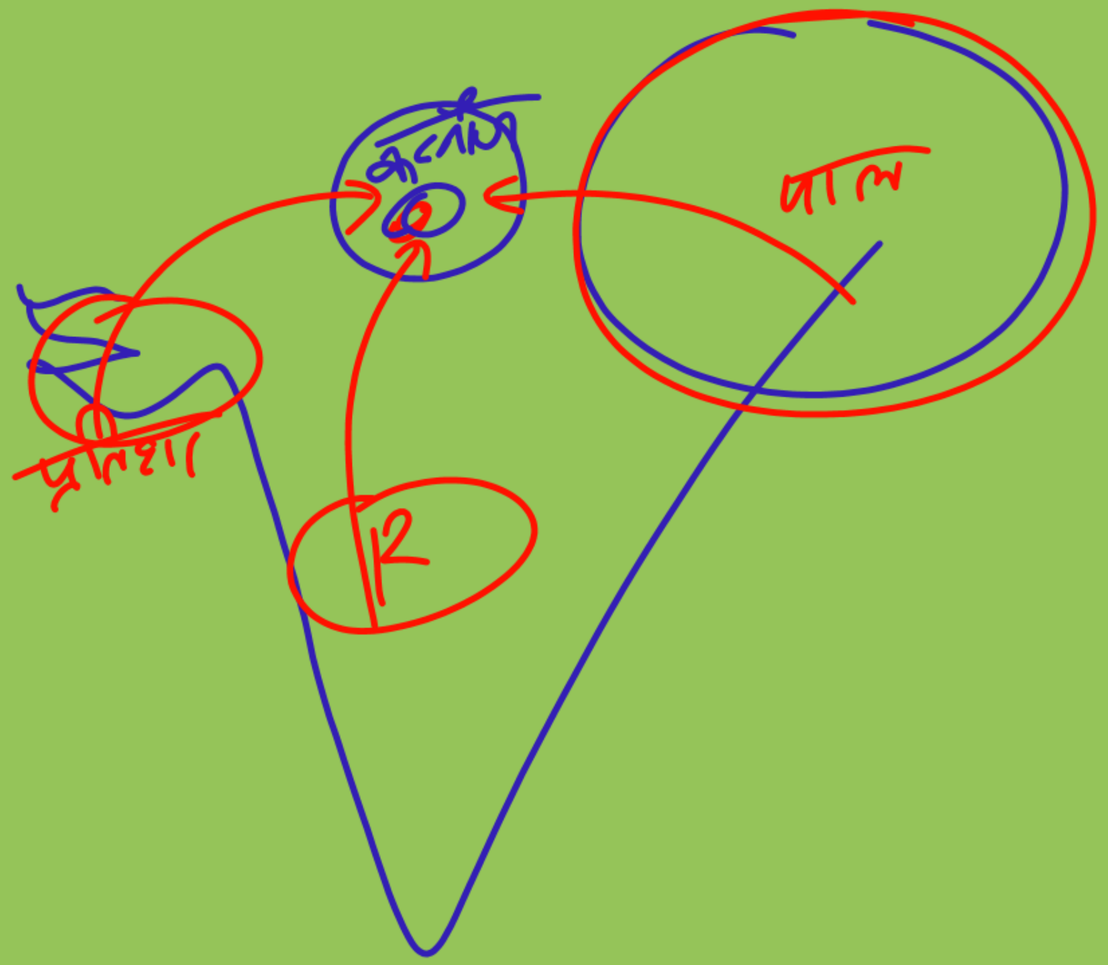

পাল
R

पाल काल का बिहार

2. धर्मपाल (770 ई. से 810 ई. तक)

- गोपाल के उपरांत उसका पुत्र धर्मपाल 770 ई. में शासक बना। धर्मपाल पहला शासक था, जिसने कन्नौज के लिए हुए त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया।
- 11वीं शताब्दी के गुजराती कवि सोड्ल ने धर्मपाल को 'उत्तरापथ स्वामी' की उपाधि से संबोधित किया है।
- धर्मपाल ने विक्रमशिला विश्वविद्यालय (भागलपुर) एवं सोमपुरी महाविहार (बंगाल) का निर्माण करवाया।

पाल काल का बिहार

3. देवपाल (810 ई. से 850 ई. तक)

- देवपाल, धर्मपाल के उत्तराधिकारी के रूप में राजगद्दी पर बैठा। इसने मुंगेर को अपने साम्राज्य की राजधानी बनाया। देवपाल ने भी कन्नौज के त्रिपक्षी संघर्ष में भाग लिया।
- देवपाल ने विस्तारवादी नीति को अपनाते हुए पूर्वोत्तर में प्राग्यज्योतिषपुर (कामरूप / असम), उत्तर में नेपाल तथा पूर्वी सागरतट पर उड़ीसा तक अपनी सत्ता का विस्तार किया।
- विदेशी यात्री सुलेमान ने देवपाल के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी है।

पाल काल का बिहार

4. महिपाल प्रथम (988 ई. से 1038 ई. तक)

- 988 ई. में महिपाल प्रथम शासक बना। इसके शासनकाल में पालवंश का दुबारा अभ्युदय हुआ। फलतः महिपाल प्रथम को पाल वंश का 'द्वितीय संस्थापक' माना जाता है। उसने समस्त बंगाल एवं मगध पर शासन किया पर यह चोल शासक राजेंद्र प्रथम से पराजित हुआ था।

① गोपाल ② धर्मपाल ③ देवपाल ④ महिपाल

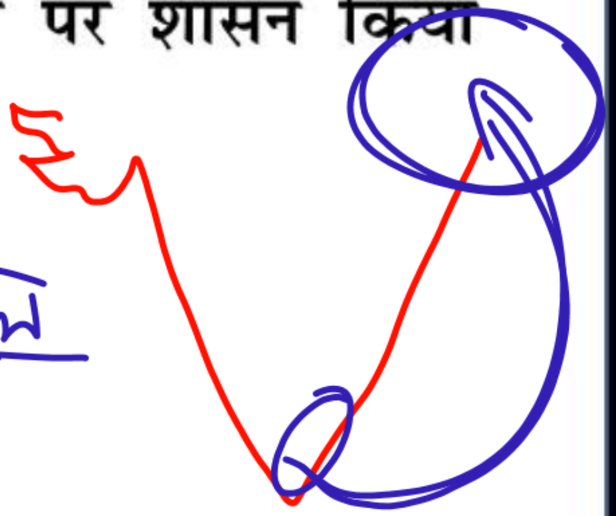

बिहार के मध्यकालीन क्षेत्रीय राजवंश

➢ 11 वीं शताब्दी के अंत तक बिहार में पाल वंश की सत्ता पतनशील हो गयो थी। बिहार पर तुकों के आक्रमण होने लगे थे। इस समय बिहार में कई क्षेत्रीय राजवंशों का उदय हुआ। जिसमें प्रमुख थे:

1. कर्नाट वंश (मिथिला / तिरहुत)

नान्यदेव

मिथिला या तिरहुत के कर्नाट वंश की स्थापना : नान्यदेव द्वारा 1097 ई. में की गई थी।

नान्यदेव द्वारा मिथिला क्षेत्र में इस वंश की स्थापना पालवंश के अंतिम शासक रामपाल के शासनकाल में किया था। नेपाल का क्षेत्र भी नान्यदेव के अधीन था।

बिहार के मध्यकालीन क्षेत्रीय राजवंश

2. चेरो राजवंश

- 12वीं शताब्दी में बिहार के शाहाबाद, सारण, चम्पारण तथा मुजफ्फरपुर जिले के क्षेत्रों में चेरो राजवंश का अभ्युदय हुआ। यह एक जनजातीय राजवंश था।
- चेरो राजा फूलचंद को जगदीशपुर मेले को प्रारंभ करने का श्रेय प्राप्त है।
- चेरो शासकों ने शेरशाह को मुगलों के विरुद्ध संघर्ष में सहायता प्रदान की थी।

बिहार के मध्यकालीन क्षेत्रीय राजवंश

3. दरभंगा राजवंश

- महेश ठाकुर द्वारा स्थापित वंश को दरभंगा राजवंश के नाम से जाना जाता है। मुगल सम्राट अकबर ने महेश ठाकुर की विद्वता से प्रभावित होकर उन्हें पुरस्कार स्वरूप मिथिला का राज्य दे दिया था।

बिहार पर तुर्क आक्रमण

- 12वीं शताब्दी के अंत में और 13वीं शताब्दी के प्रारंभ में बिहार पर तुर्की का आक्रमण हुआ। उस समय बिहार का क्षेत्र एक संगठित राजनीतिक इकाई नहीं था।
- उत्तर और दक्षिण बिहार के मध्य गंगा नदी न केवल भौगोलिक विभाजन रेखा बल्कि राजनीतिक सीमा रेखा भी थी।
- उत्तरी बिहार का अधिकांश भाग उस समय मिथिला के कर्नाट वंश के शासकों के अधीन था वहीं दक्षिणी बिहार विभिन्न छोटे-छोटे शासकों के अधीन था।
- दक्षिण बिहार के पठारी क्षेत्रों में छोटानागपुर के नागवंश की भी चर्चा मिलती है।

बिहार पर तुर्क आक्रमण

बख्तियार खिलजी

- बख्तियार खिलजी बनारस और अवध क्षेत्र के तुर्क सेनापति मलिक हुसामुद्दीन का सहायक था। इसने 12वीं शताब्दी के अंत व 13वीं शताब्दी के प्रारंभ में बिहार में कर्मनाशा नदी के पूर्वी क्षेत्रों में सफल सैनिक अभियान चलाया।
- बख्तियार खिलजी के सैनिक अभियान के समय पाल वंश का शासक इन्द्र प्रद्युम्नपाल तथा सेन वंश का शासक लक्ष्मण सेन था।
- बिहार में तुर्कों की सबसे महत्वपूर्ण विजय बख्तियार खिलजी की ओदंतपुरी विजय थी।

बिहार पर तुर्क आक्रमण

बख्तियार खिलजी

- बख्तियार खिलजी ने 1198 में ओदंतपुरी (आधुनिक बिहार शरीफ) पर विजय प्राप्त की थी। उसने बिहार शरीफ को ही
- अपना प्रशासनिक मुख्यालय बनाया। 1198 ई. में बिहार में तुर्क सत्ता की स्थापना हुई।
- बख्तियार खिलजी ने नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वस्त कर दिया तथा बख्तियारपुर शहर की स्थापना की थी।

बिहार पर तुर्क आक्रमण

बख्तियार खिलजी

- बख्तियार खिलजी ने 1203-04 ई. में लक्ष्मण सेन की राजधानी नदिया (बंगाल) पर आक्रमण किया और उसे पराजित किया।
- इस प्रकार बख्तियार खिलजी ने बिहार और बंगाल के क्षेत्रों को जीतकर एक प्रांत के रूप में संगठित करके लखनौती को राजधानी के रूप में स्थापित किया।

बिहार पर तुर्क आक्रमण

बख्तियार खिलजी

- बिहार का प्रथम मुस्लिम विजेता बख्तियार खिलजी ही था । इसे बिहार में तुर्क सत्ता का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- 1206 ई. में अलीमर्दान ने बख्तियार खिलजी की हत्या कर उसके शव को बिहार शरीफ के इमादपुर मुहल्ला में दफन कर दिया। बिहार पर बख्तियार खिलजी के हमले का पहला विवरण मिन्हाज-उस-सिराज की पुस्तक 'तबकात-ए-नासिरी' मे मिलता है।

सल्तनतकालीन बिहार

- 1206 ई. में बख्तियार खिलजी की मृत्यु के उपरांत कुतुबुद्दीन एबक ने उत्तरी भारत में स्वतंत्र राज्य की स्थापना की, जिसमें बिहार भी सम्मिलित था।

गुलाम वंश

- बिहार में सैनिक अभियान आयोजित कर विहार को दिल्ली सल्तनत के अधीन करने वाला प्रथम सुल्तान इल्तुतमिश था।
- इल्तुतमिश ने बिहार में अपना प्रथम सूबेदार मलिक अलाउद्दीन जानी को नियुक्त किया था।
- बलबन के शासन काल में गया का क्षेत्र दिल्ली सल्तनत के अधीन था, जिसका वर्णन गया के राजा वनराज की गया प्रशस्ति में किया गया है।

सल्तनतकालीन बिहार

तुगलक वंश

- इस वंश का संस्थापक गयासुद्दीन तुगलक था। बिहार क्षेत्र में तुगलक वंश की सत्ता एवं प्रशासन की जानकारी सूफी संत हजरत शर्फुद्दीन याहिया मनेरी की रचना 'मलफूजात' मिलती है।
- बिहार के तिरहुत क्षेत्र में तुगलककालीन सिक्के भी पाए गए हैं।
- गयासुद्दीन तुगलक जब 1324 ई. में बंगाल अभियान से वापिस आ रहा था, उस समय उसने कर्नाट वंश के शासक हरिसिंह देव को पराजित किया तथा तिरहुत (मिथिला) को तुगलक साम्राज्य में मिला लिया गया।

सल्तनतकालीन बिहार

- हरिसिंह देव पराजित होकर नेपाल चला गया।
- मोहम्मद बिन तुगलक ने दरभंगा में एक दुर्ग तथा जामा मस्जिद का निर्माण करवाया था। इसने दरभंगा (तिरहुत) का नाम बदलकर तुगलकपुर रख दिया।
- मोहम्मद बिन तुगलक ने तिरहुत (तुगलकपुर) से अपने सिक्के जारी किए थे।

सल्तनतकालीन बिहार

बिहार शरीफ

- फिरोजशाक तुगलक ने बिहार के प्रसिद्ध संत शेख अहमद चर्मपोश से भेंट की। जिसकी चर्चा 'सीरते फिरोजशाही' में की गई है। पटना तथा गया के क्षेत्रों में फिरोजशाह तुगलक के कई अभिलेख प्राप्त हुए हैं। बिहारशरीफ से फिरोजशाह तुगलक के फारसी अभिलेख मिले हैं।
- फिरोजशाह तुगलक ने राजगीर के जैन मंदिरों को अनुदान दिया था।

सल्तनतकालीन बिहार

लोदी वंश

- सिकन्दर लोदी के बिहार अभिलेख से ज्ञात होता है, कि उसने 1495-96 ई. में जौनपुर के शासक हुसैन शाह शर्की को पराजित कर दरिया खां नूहानी को बिहार का प्रशासक नियुक्त किया था।

सल्तनतकालीन बिहार

नूहानी वंश

- लोदी वंश के शासनकाल में बिहार में नूहानी अफगानों की स्थिति सुदढ़ हुई। बिहार में नूहानी राज्य का संस्थापक मोहम्मद शाह नूहानी था।
- दरिया खां नूहानी के पश्चात् उसका पुत्र बहार खां नूहानी बिहार का प्रशासक बना। मोहम्मद शाह नूहानी का असली नाम बहार खां था।
- पानीपत की प्रथम यद्ध (21 अप्रैल 1526) के उपरांत बहार खां ने सुल्तान मोहम्मद शाह नूहानी के नाम से बिहार में स्वतंत्र सत्ता की स्थापना की थी।

सल्तनतकालीन बिहार

- सुल्तान मोहम्मद शाह नूहानी ने इब्राहिम लोदी की सेना को कनकपुरा युद्ध में पराजित किया था।
- मोहम्मद शाह नूहानी की 1528 ई. में मृत्यु हो गई। तदोपरांत उसका अल्पवयस्क पुत्र जलाल खां (जलालुद्दीन) शासक नियुक्त हुआ। फरीद खां (शेर खां) उसका संरक्षक नियुक्त हुआ। शेर खां ने बंगाल के शासक नुसरत शाह के बिहार पर आक्रमण को विफल कर दिया था।
- महमूद लोदी को विस्थापित कर बाबर ने मुहम्मद शाह नूहानी के पुत्र जलाल खां को बिहार का प्रशासक नियुक्त किया।

मुगलकालीन बिहार

बाबर

- भारत में मुगल वंश का संस्थापक बाबर था। पानीपत के प्रथम यद्ध (21 अप्रैल 1526) में बाबर ने इब्राहिम लोदी को पराजित कर मुगल साम्राज्य की नींव डाली।
- पानीपत के प्रथम यद्ध में बाबर ने पहली बार तुलगमा यद्ध नीति एवं तोपखाने का प्रयोग किया था।
- बाबर ने अपने साम्राज्य विस्तार के क्रम में जलालुद्दीन (जलाल खां) को बिहार का प्रशासक नियुक्त किया।

मुगलकालीन बिहार

घाघरा का युद्ध (6 मई 1529)

- इस युद्ध में बाबर ने घाघरा या सरयू नदी के तट पर (बिहार) अफगानों को पराजित किया। यह बाबर द्वारा लड़ा गया अंतिम युद्ध था। बाबर ने 6 मई 1529 को बंगाल एवं बिहार की संयुक्त सेना को घाघरा के युद्ध में हराया था। बाबर ने महमूद लोदी को पराजित कर बिहार पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया। घाघरा का युद्ध मध्यकालीन इतिहास का प्रथम युद्ध था, जिसे जल एवं थल दोनों जगह लड़ा गया।

मुगलकालीन बिहार

अकबर

- 1576 ई. में अकबर ने बंगाल तथा बिहार को मुगल साम्राज्य में मिला लिया। दाऊद खां करारानी पटना नगर से पलायन कर गया।
- दाऊद खां करारानी बिहार का अंतिम अफगान शासक था।

मुगलकालीन बिहार

- बिहार को सर्वप्रथम अपने साम्राज्य में मिलाने वाला मुगल शासक अकबर था। 1580 ई. में अकबर ने बिहार को मुगल साम्राज्य के प्रांत का दर्जा दिया तथा मुनीम खा को बिहार का गवर्नर नियुक्त किया।
- अकबर कालीन बिहार के मुगल प्रांतपतियों में राजा मान सिंह अत्यधिक प्रसिद्ध था। राजा मानसिंह ने रोहतास को अपनी राजधानी बनाया। वह 1587-97 ई. के बीच मुगल प्रांतपति बना रहा।
- अकबर के शासनकाल में बिहार में सर्वाधिक विद्रोह हुए।

मुगलकालीन बिहार

जहाँगीर

- जहाँगीर मुगल शासक बनने के बाद बाज बहादुर (लाल बेग) को बिहार का सूबेदार नियुक्त किया।
- बाज बहादुर ने खड़गपुर के राजा संग्राम सिंह के विद्रोह को सफलतापूर्वक दबाया था।
- बाज बहादुर ने दरभंगा में एक मस्जिद एवं एक नूरसराय नामक सराय का निर्माण कराया। यह सराय नूरजहां (मेहरूनिस्सा) के बंगाल से दिल्ली जाने के क्रम में यहां उनके रुकने के लिए बनवाया गया था।

मुगलकालीन बिहार

- नूरजहां के भाई इब्राहिम खां काकर को 1615 ई. में बिहार का सूबेदार नियुक्त किया गया।
- इब्राहिम खां काकर ने पटना के समीप मनेर में मखदुम शाह दौलत का मकबरा का निर्माण करवाया, जो बिहार में मुगल स्थापत्य सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है।
- फर्रुखसिय़र पहला मुगल बादशाह था, जिसका बिहार की राजधानी पटना (अजीमाबाद) में 1713 ई. में राज्याभिषेक हुआ।